“मन्नू भंडारी के साहित्य सृजन में नारी विमर्श का अध्ययन ”

“बेटी बचाओ,बेटी पढ़ाओ”

हिंदी विषयमें डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध का प्रारूप

शोध निर्देशक
JV’n (डॉ) चित्रा

शोधार्थी
JV’n वंदना राणा
नामांकन क्रमांक- Jvr-LI/20/4011

शिक्षा और कार्यप्रणाली संकाय
हिंदी विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,जयपुर, (राजस्थान)

2020

शोध शार्षिक

मन्नू भंडारी के साहित्य सृजन में नारी विमर्श का अध्ययन

शोध प्रस्तावना

प्राचीन काल में नारी को क्षमा, तेज, गंभीर, शीतल तथा उच्च स्वरूपिणी माना जाता था। लेकिन समय के परिवर्तन के अनुरूप नारी का रूप बदल गया। सुशिक्षित नारी ने नौकरी करना शुरू की। आर्थिक रूप से स्वतंत्र नारी परिवार में पति की सहयोगी सिद्ध हुई। मन्नू भंडारी की सशक्त तुलिका भारतीय नारी के इन बदलते स्वरूपों का सटीक चित्रण करने में सक्षम रही हैं। मन्नू भंडारी स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य की बहुचर्चित महिला लेखिका हैं। वह नारी जीवन के मूक क्षणों को वाणी देने में सक्षम दिखती है। मन्नू जी की रचनाओं में नारी के विभिन्न पारिवारिक रिश्तों और व्यापक सामाजिक संदर्भों का अंकन हुआ है। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत अनुभूतियों से बदलते सामाजिक स्थिति के प्रति सजग नारी को गढ़ा है।

भारतीय नारी की मुक्ति के आन्दोलन का इतिहास बहुत पुराना है, यह अलग बात है कि तब उसे 'नारी-विमर्श ' या 'नारीवादी साहित्य' जैसी संज्ञा से विभूषित नहीं किया गया था। किन्तु समय एवं परिस्थिति के अनुसार नारी की दशा को सुधारने एवं उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में आगे लाने के सतत् प्रयास होते रहे हैं। स्वतन्त्रता के बाद से नारी-विमर्श एक गम्भीर विचार केन्दि्त मुद्दा रहा है। किन्तु बिडम्बना यह रही है, कि इस विषय को छूते ही बड़े-बड़े बुद्धिमान व्यक्ति मानवीयता का आवरण उतार कर पुरूषवादी सुर अलापने लगते हैं। अक्सर यह विषय एक फैशनेबल बहस मात्र बनकर रह गया है। लेकिन विकास की प्रक्रिया धीमी हो सकती है, अवरूद्ध नहीं। इसीलिए फैशनेबल बहस बन जाने व अपने स्वरूप की सत्यता को खो देने के उपरान्त भी ऐसा चिन्तन चलता रहता है, जिसने नारी-विमर्श के बारे में भ्रान्तियों को दूरकर उसके सत्य

को स्थापित ही नहीं किया बल्कि नारी-विमर्श की एक स्वस्थ व्याख्या की है। इन चिंतकों में मन्नू भण्डारी की अग्रणी भूमिका रही है, जिन्होंने अपने कथा-साहित्य के माध्यम से नारी जीवन के अनेक प्रश्नों पर तर्क संगत बात की है। वर्तमान में नारी विमर्श एक ज्वलन्त मुद्दा हो गया है। यह आज के समय में एक तरह से अब तक की परिभाषित नारी की भूमिका को बदलने वाला विमर्श भी है। इस विमर्श ने शताब्दियों से चली आ रही नारी की छवि को तोड़कर उसे आधुनिक समाज में एक अलग स्थान दिया है। नारी-विमर्श पुरूष विरोधी झण्डा लेकर आगे चलने वाला नकारात्मक विमर्श नहीं है। बल्कि एक स्वस्थ मानवीय दृष्टिकोण है। इसकी व्यापकता औरविस्तार को स्पष्ट रूप से विवेचित और स्थापित करने वाला साहित्य मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में आया है।

नारी समाज का केन्द्र बिन्दु है। नारी के सामाजिक मूल्यों की परख समाज और साहित्य के पल-पल परिवर्तित परिवेश से ही हो सकती है। पूर्व प्रेमचन्द युग की नारी विलास और श्रृगांर की गुड़िया मात्र थी। उसके हाथों में अपने जीवन की बागडोर नहीं थी- वह पुरूषों के हाथ की कठपुतली थी। प्रेमचन्द युग के उपन्यासों की नारी शिक्षित और जागरूक थी। जिसे अधिकार और कर्तव्यों का ज्ञान था।

आधुनिक साहित्य में मन्नू भण्डारी का अप्रतिम योगदान है। इनके साहित्य में समाज सापेक्षता, अन्याय-अत्याचार का विरोध, सार्थक मूल्यों की रक्षा का प्रयत्न दृष्टिगत होता है। कर्म और संघर्ष में उनका विश्वास है। लेखिका व्यावसायिक प्रतिबद्धता से अलग रहकर सम सामाजिक लोक जीवन से जुड़ी रही है, और उन्होंने जीवन की कठिन चुनौतियों को स्वीकार किया है।

मन्नू भण्डारी को व्यक्ति, परिवार, समाज, राजनीति, धर्म, प्रशासन एवं शिक्षा आदि क्षेत्रों की समस्याओं ने आलोकित किया है। मन्नू भण्डारी ने पारिवारिक सम्बन्धों की समस्याओं को दोहरे स्तर पर उद्घाटित किया है। संयुक्त परिवार के विघटन को 'ए खाने आकाश नाई' छत बनाने वाले आदि कहानियों में तथा 'स्वामी' उपन्यास में यथार्थता से उठाया है। मन्नू भण्डारी ने दाम्पत्य विघटन से आए अकेलेपन को 'आपका बन्टी' 'एक इन्च मुस्कान' 'उपन्यास' तथा 'बन्द दराजों का साथ' कहानी में सार्थकता से उठाया है।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज में स्वतन्त्रता प्राप्ति के उद्देश्य से मोहभंग हो गया है। राजनीति में भ्रष्ट्र नेतृत्व , वोट की नीति, आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि का वर्चस्व है। धर्म और जाति के नाम पर राजनीतिज्ञ वोट मांगते हैं तथा साम्प्रदायिक दंगे कराते हैं। इस परिवेश में नारी हताश व निराश है। परन्तु शिक्षा ने नारी को एक नई चेतना प्रदान की है। अब नारी शिक्षित और जागरूक होकर राजनीति में भागीदारी करने लगी है। आधुनिक युग में जो परिवर्तन हुआ है, वह नारीवाद की ही उपज है। मन्नू भण्डारी ने अपने कथा साहित्य में 'मैं हार गई' 'हार' आदि कहानियों में राजनीति की स्वार्थपरता, 'एक प्लेट सैलाब' में राजनीतिक भ्रष्टाचार, परिवारवाद का वर्चस्व, 'महाभोज' उपन्यास में विकृत राजनीति व टूटे हुए मूल्यों का चित्रण किया है।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ, पाश्चात्यशिक्षा के प्रति आकर्षण से नारी में नवीन चेतना आई है। पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित नारी की दृष्टि में वह पति की सिर्फ दासी नहीं है, बल्कि उसका भी पति के समान अधिकार है।

मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व और कृतित्व

मन्नू भंडारी एक भारतीय लेखक है, जो विशेषतः 1950 से 1960 के बीच अपने कार्यो के लिए जानी जाती थी। सबसे ज्यादा वह अपने दो उपन्यासों के लिए प्रसिद्ध थी, पहला आपका बंटी और दूसरा महाभोज। नयी कहानी अभियान और हिंदी साहित्यिक अभियान के समय में लेखक निर्मल वर्मा, राजेंद्र यादव, भीष्म साहनी, कमलेश्वर इत्यादि ने उन्हं अभियान की सबसे प्रसिद्ध लेखिका बताया था। 1950 में भारत को आज़ादी मिले कुछ ही साल हुए थे, और उस समय भारत सामाजिक बदलाव जैसी समस्याओ से जूझ रहा था। इसीलिए इसी समय लोग नयी कहानी अभियान के चलते अपनी-अपनी राय देने लगे थे, जिनमे भंडारी भी शामिल थी। उनके लेख हमेशा लैंगिक असमानता और वर्गीय असमानता और आर्थिक असमानता पर आधारित होते थे।

जब अंतरिक्ष में गूंजा 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा', पढ़िए राकेश शर्मा की कहानी नाटक `बिना दीवारों का घर' (1966) विवाह विच्छेद की त्रासदी में पिस रहे एक बच्चे को केंद्र में रखकर लिखा गया। उनका उपन्यास `आपका बंटी' (१९७१) हिन्दी के सफलतम उपन्यासों में गिना जाता है। लेखक और पति राजेंद्र यादव के साथ लिखा गया उनका उपन्यास `एक इंच मुस्कान' (1962) पढ़े लिखे आधुनिक लोगों की एक दुखांत प्रेमकथा है, जिसका एक एक अंक लेखक-द्वय ने क्रमानुसार लिखा था। मन्नू भंडारी हिन्दी की लोकप्रिय कथाकारों में से हैं। नौकरशाही में व्याप्त भ्रष्टाचार के बीच आम आदमी की पीड़ा और दर्द की गहराई को उद्घाटित करने वाले उनके उपन्यास `महाभोज' (1979) पर आधारित नाटक अत्यधिक लोकप्रिय हुआ था। इसी प्रकार 'यही सच है' पर आधारित 'रजनीगंधा' नामक फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हुई थी और उसको 1974 की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त मन्नू भंडारी को

1--हिन्दी अकादमी से सम्मान,

2-दिल्ली का शिखर सम्मान,

3-बिहार सरकार से सम्मान,

4-भारतीय भाषा परिषद सम्मान कोलकाता से,
5-राजस्थान संगीत नाटक अकादमी से स्मान,
6-व्यास सम्मान और
7-उत्तर-प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा पुरस्कृत किया गया।

प्रारंभिक जीवन

मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्यप्रदेश के भानपुरा में हुआ था और राजस्थान में वे बड़े हुए, जहाँ उनके पिता सुखसम्पत राय भंडारी एक स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता और पहली इंग्लिश टू हिंदी और इंग्लिश टू मराठी डिक्शनरी के निर्माता भी थे। अपने माता-पिता की पाँच संतानों में से भंडारी सबसे छोटी थी। वे दो भाई और तीन बहने थी।

शिक्षा और शादी

मन्नू भंडारी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर से पूरी की, कलकत्ता यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट हुए और फिर हिंदी भाषा और साहित्य में एम.ए. की डिग्री हासिल करने के लिए वे हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी गयी। भंडारी हिन्दू लेखक राजेन्द्र यादव की पत्नी थी।

व्यावसायिक करियर

उन्होंने हिंदी प्रोफेसर के रूप में अपने करियर की शुरुआत की थी। 1952-1961 तक उन्होंने कोलकाता बालीगंज शिक्षण सदन में, 1961-1965 तक कोलकाता रानी बिरला कॉलेज में, 1964-1991 तक मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली यूनिवर्सिटी में पढ़ाती थी और फिर 1992-1994 तक वे विक्रम यूनिवर्सिटी की उज्जैन प्रेमचंद सृजनपीठ में डायरेक्टर थी।

मन्नू भंडारी के मुख्य रचनाएँ

कहानी-संग्रह

- एक प्लेट सैलाब

- मैं हार गई
- तीन निगाहों की एक तस्वीर
- यही सच है
- त्रिशंकु

श्रेष्ठ कहानियाँ

- आँखों देखा झूठ
- नायक
- खलनायक
- विदूषक

फ़िल्म पटकथाएँ

- रजनीगंधा
- निर्मला
- स्वामी
- दर्पण

नाटक

- बिना दीवारों का घर (1966)
- महाभोज का नाट्य रूपान्तरण (1983)
- आत्मकथा,एक कहानी यह भी (2007)
- प्रौढ़ शिक्षा के लिए: सवा सेर गेहूं (1993) आप का बंटी

उपन्यास :-

- आपका बंटी,
- महाभोज,
- स्वामी,
- एक इंच मुस्कान
- कलवा,
- एक कहानी यह भी।

फिल्म अनुकूलन के विषय में विवाद

भंडारी ने अपने दूसरे उपन्यास 'आप का बंटी' के अधिकार बेच दिए और बाद में धर्मेंद्र गोयल द्वारा बनाई गई फिल्म के लिए और बाद में शिशिर मिश्रा द्वारा निर्देशित फिल्म के लिए अनुकूलित किया गया। इस फिल्म, समी की धारा, ने शबाना आज़मी, शत्रुघ्न सिन्हा, टीना मुनीम और विनोद मेहरा की भूमिका निभाई। भंडारी ने बाद में फिल्म निर्माता काले विकास पिक्चर्स प्राइवेट लिमिटेड को मुकदमा दायर किया कि इस अनुकूलन ने उनके उपन्यास को विकृत कर दिया और इसके परिणामस्वरूप भारतीय कॉपीराइट अधिनियम, 1 9 57 की धारा 57 का उल्लंघन किया। इस मामले में निर्णय, मनु कृष्णा बनाम कला विकास मोशन पिक्चर्स लिमिटेड भारतीय कॉपीराइट कानून में एक ऐतिहासिक निर्णय है जो भारतीय कॉपीराइट कानून के तहत लेखक के नैतिक अधिकारों के दायरे को स्पष्ट करता है। न्यायालय भंडारी के पक्ष में था, लेकिन वह और निर्माता अंततः अदालत के बाहर एक समझौते पर पहुंचे।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये निम्न उद्देश्य निर्धारित किया गये है।

1-स्वंत्रतता के बाद साहित्य और नारी की स्थिति का अध्ययन

2-आधुनिक दौर में नारी की स्थिति और साहित्य के योगदान का अध्ययन

3-मन्नू भंडारी के उपन्यासों में नारी विमर्श का अध्ययन

4-मन्नू भंडारी की कहानियों में नारी विमर्श का अध्ययन

5-मन्नू भंडारी के साहित्य में नारी संबंधी दृष्टिकोण का अध्ययन

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन दार्शनिक शोध प्रविधि से पूरा किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन में साहित्यकार मन्नू भंडारी के उपन्यास और कहानियों के साथ अन्य साहित्य का संकलन कर उनका अध्ययन किया जायेगा। मन्नू भंडारी के साहित्य में नारी को किस रूप में चित्रित किया गया है,इसको भी अध्ययन में शामिल किया गया है।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मनन्नू भंडारी के उपन्यास और कहानियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। जो इस प्रकार से है-

न्यादर्श का चयन	
उपन्यास	**कहानियां**
1-आपका बंटी, 2-महाभोज, स्वामी, 3-एक इंच मुस्कान 4-कलवा 5-एक कहानी यह भी।	1-एक प्लेट सैलाब 2-मैं हार गई 3-तीन निगाहों की एक तस्वीर 4-यही सच है 5-त्रिशंकु **श्रेष्ठ कहानियाँ** 6-आँखों देखा झूठ 7-नायक-खलनायक 8-विदूषक

मन्नू भंडारी की नारी चिंतन

मन्नू भंडारी ने उपन्यास और कहानी दोनों विधाओं में लेखन कार्य किया है। पति नाजेद्र यादव के साथ लिका गया उनका उपन्यास एक इंच मुस्कान, पढ़े लिखे और आधुनिकता पसंद लोगों की दुखमयी प्रेमगाथा है। वही विवाह टूटने की त्रासदी में घुट रहे एक बच्चे को केंद्रीय विषय बनाकर लिखे गये उनके उपन्यास आपका बंटी को हिंदी के सफलतम उपन्यासों की कतार में रखा जाता है। जिस संवेदनशीलता और स्नेह से मन्नू जी ने इस चरित्र और उसके मानसिक जीवन को लिख पायी,वह हिंदी में दुबारा संभव नहीं हो सका।

स्वतंत्रता प्रत्येक व्यक्ति का बुनियादी अधिकार है। आधुनिक युग में इसे एक जीवन मूल्य के रूप में भी देखा जाता है। सदियों से पराधीन रही नारी की इसी

स्वंतंत्रता की चाह को नारी आंदोलन की संज्ञा मिलती है। अपने आंरभिक काल में इस आंदोलन को पुरूष विरोद आंदोलन के रूप में देखा गया। पंरतु बाज में यह स्पष्ट हुआ कि यह आंदोलन पुरूष विरोधी आंदोलन न होकर व्यवस्था विरोधी आंदोलन है,जिसके तहत स्त्री का शोषण किया जाता है। यह आंदोलन परिवर्तन की मांग करता है। परिवर्तन उस व्यवस्था में होना चाहिए अथवा उस मानसिकता में होना चाहिए,जो नारी को गुलाम बनाती है।

वस्तुत नारीवाद स्त्री को पस्तु से व्यक्ति की जद्दोजहद का परिणाम है। इस संदर्भ में औरत के हक में की लेखिका तस्लीमान नसरीन का कथन दृष्टव्य है कि जिस दिन समाद स्त्री शरीर नहीं,बल्कि इसकी मेधा और श्रम क मूल्य देना सीख जायेगा सिर्फ उस दिन स्त्री मनुष्य के रूप में स्वीकृत होगी।

वैश्विक धरातल पर दृष्टिपात करें तो सहत ही ज्ञात होता है कि नारी युगों में पुरूष द्वारा संचालित रही है। बीसवीं शताब्दी में शिक्षा के बढ़ते प्रचार-प्रसार,आर्थिक,आत्मनिर्भरत,सामाजिक जागृति आदि के परिणामस्वरूप पहली बार वह अपने अस्तित्व की ओर जागृत होती है।

डॉ सच्चिदानंद चतुर्वेदी ने इस संबंध में लिखा है कि ये स्त्रियां इस बात में विश्वास रखती है कि मन का संतोष प्राप्त करने के लिये विवाह भी यदि बाधक बने तो उसे निसंकोच तोड़ देना चाहिए,क्योकिं देखा गया है कि विवाह प्राय संत्रियों की महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में बाधक बनता है। मन्नू बंडारी ने अपनी कहानियों में ऐसी संत्रियों गढ़ी है,जो घोर व्यक्तिवादी,स्वंत्रत और अपने वैयक्तिक विकास में विवाद को बंधन स्वीकार करने वाली है।

उनमें जीती बाजी की हार की मुरला,आते-आते यायावर की मिताली,घुटन की प्रतिमा,नई नौकरी की रमा आदि उल्लेखनीय है। मुरला को विवाग में बंधना व्यक्तित्व को बेचने समान लगता है। लेखिका ने मुरला और उसकी मित्रों के विचारों का परिचय इस तरह दिया है कि एक पढ़ी-लिखी लड़की किस प्रकार अपने विचारों और व्यक्तित्व का खून करके पति के रंग में रंग सकती है,यह

बात इन बुद्धिजीवी और अपने ही व्यक्तित्व के भार से दबी लड़कियों को लिए कल्पनातीत थी।

एक आम कहावत है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है, लेकिन मैं समझती हूँ कि ये गलत है। बल्कि स्त्री ही स्त्री के मन की थाह पा सकती है। उसकी पीड़ा को दिल से महसूस कर सकती है, उसके दर्द को अभिव्यक्त भी कर सकती है और यदि वह स्त्री साहित्यकार हो तो क्या कहने।

यही वजह है कि स्त्री विमर्श के दौर से मन्नू भंडारी की कहानियों से गुजरना आश्वस्तीकर है इन अर्थों में भी कि लेखिका का स्वयं स्त्री होना यहाँ किसी अकारण पक्षधरता का कारण नहीं बनता, न ही पुरुष को खलनायक का चरित्र देने का लालच होता है।

बात करते हैं 'आपका बंटी' की। एक स्त्री भावनाओं में किस कदर डूब सकती है, इसे केवल इससे ही समझ सकते हैं कि जब मन्नू जी को किसी ने एक बच्चे बंटी के बारे में बताया तो उनकी आँखों में सिर्फ बंटी के ही चित्र बनते रहे, वे सारा दिन उसी के बारे में सोचती रहीं और वे कहती हैं घर लौटकर मैंने पाया कि 'बंटी एक आकार ग्रहण करने लगा है' अनुभूति ऐसी गोया कोख में अपना अंश आकार ले रहा है। सचमुच ही एक साहित्यकार के लिए उसका साहित्य उसके शिशु की भाँति ही होता है।

मन्नू भंडारी लिखती है,कि
अपने साहित्य को इस कदर स्वयं से जोड़ लेना ही शायद मन्नू जी की खासियत थी। पति से अलग रह रही स्त्री के मन को कठोर आवरण के भीतर बाल मन से भी कोमल बताया गया है।

जब बंटी शकुन की ढोडी पर स्थित तिल पर हाथ फिराता है, निश्चय ही उस वक्त उसे अपने दाम्पत्य जीवन से जुड़ी बातें एक कसक के साथ याद आती हैं। पहले वह उसका हाथ झटकती है फिर सहमें बंटी को पुन: लाड़ से कहती हैं - फिरा! तझे अच्छा लगता है ना? ऐसी सूक्ष्मता से नारी मन की अभिव्यक्ति विरले ही कर पाते हैं।

शकुन के जरिये एक स्त्री के मन की छटपटाहट स्पष्ट महसूस होती है, जब शकुन के सामने अजय के हस्ताक्षरयुक्त तलाक के कागज रखे होते हैं। एक अध्याय था, जिसे समाप्त होना था और वह हो गया। दस वर्ष का यह विवाहित जीवन एक अंधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूति से भिन्न न था।

आज जैसे एकाएक वह उसके अंतिम छोर पर आ गई है, पर आ पहुँचने का संतोष भी तो नहीं है, ढकेल दिए जाने की विवश कचोट भर है। पर कैसा है यह छोर? न प्रकाश, खुलापन, न मुक्ति का अहसास। बची-खुची उम्मीदें भी खामोशी के साथ मर गई।

हस्ताक्षर करने के बाद चाचाजी दबे-ढंके अंदाज में आगे की जिंदगी के बारे में सोचने का इशारा करते हैं, तो अनायास ही शकुन का स्त्रीमन पहले तो मीरा (पति का जिस स्त्री से संबंध है) के बारे में सोचता है, जो अनदेखी है, फिर भी सामने आ खड़ी होती है, पर फिर मन कहीं और तैर जाता है और डॉक्टर जोशी का चेहरा उसके सम्मुख आ जाता है।

शोध की आवश्यकता

किसी भी समाज की संरचना संपूर्णता में समाज के अस्तित्व को प्रभावित करती है। भारतीय समाज की स्वंतंत्रता प्राप्त से पहले जो सरंचना थी, वह

सांस्कृतिक थी। इसका नियंत्रण धर्म तथा शास्त्रवाद से होता था। फलत समाज में नारी की स्थिति यो तो दोयम रही या फिर सेविका की। स्वंत्रतंत्रा प्राप्ति के बाद संरचना के नियंत्रणकारी स्त्रोतों में राजनीति भी जुड़ गई। राजनीति मे साठोत्तरी कालखंड तक आत-आते संस्कृति को केंद्र से अपदस्थ कर स्वंय को केंद्र में स्थापित कर लिया। इसके क्रांतिकारी प्रभाव हुए है। इनमें से एक प्रभाव हिंदी साहित्य में शुरू विभिन्न विमर्श है। नारी-विमर्श उन्ही में से एक है।

विगत तीन दशकों में हिंदी साहित्य लेखन के क्षेत्र अभूतपूर्व नारीवादी लेखन की सक्रियता की आहट सुनाई पड़ रही है। इसमें नारी लेखिकाओं का विशेष योगदान है। सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया ने नारी-पुरूष संबंधो के पहले से चल आ रहे मानकों की नींव हिला दी है। इनहीं का समवेत स्वर नारी विमर्श के केद्र में है। जिसमें नारी अब तक स्वंय के लिये वर्जित तथा पुरूष द्वारा एक एकाधिकृत क्षेत्रों में बराबरी की मांग करती हुई डंके की चोट पर आगे बढ़ रही हैयह परिवर्तन नारीवादी दृष्टि से लिशे गये साहित्य में कलात्मक स्तर पर . अभिव्यक्त हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन में नारी की इसी स्थिति में ये परिवर्तन को लेकर अध्ययन की आवस्यकता महसूस की जा रही था।

शोध का महत्व

भारतीय नारी की मुक्ति के आंदोलन का इतिहास बहुत पुराना है,यह अलग बात है कि तब उसे नारी विमर्श या नारीवादी साहित्य जैसी संज्ञा से विभूषित नहीं किया गया था,किंतु समय और परिस्थितियों के अनुसार नारी की दशा को सुधारने एंव उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में आगे लाने के लिये सतत् प्रयास होते रहे है। स्वंत्रतंता के बाद से ही नारी विमर्श एक गंभीर विचार केंद्रित मुद्दा रहा है। किंतु विडम्बना यह रही है कि इस विषय को छूते ही बड़े-बड़े बुद्धिमान व्यक्ति मानवीयता का आवरण उतारकर पुरूषवादी सुर अलापने लगते है। अक्सर यह विषय एक फैशनेबुल बहत मात्र बनकर रह गया है,लेकिन विकास की प्रक्रिया धीमी हो सकती है, लेकिन अवरूध नहीं है।

फैशनेबल बहस बन जाने व अपने स्वरूप की सत्यता खो देने के उपरांत भी ऐसा चिंतन चलता रहा है,जिसने नारी विमर्श के बारे में भ्रांतियों को दूर कर उसके सत्य को स्थापित नहीं किया बल्कि नारी विमर्श की एक स्वस्थ व्याख्या की है। इन चिंतकों में मन्नू बडारी की अग्रणी भूमिका रही है। जिन्होने अपने कथा साहित्य के माध्यम से नारी जीवन के अनेक प्रश्नों पर तर्कसगंत बात कही है।

नारी विमर्श के माध्यम से प्रसंशनीय रूप में हिंदी में मन्नू भंडारी द्वारा लिखित कथा साहित्य में नारी मुक्ति उसकी सुरक्षा और अधिकारों के संदर्भ में एक गंभीर चिंतन को व्यापक धरातल पर उभारा गया है। मन्नू भंडारी ने अपने लेखन के केंद्र में नारी जीवन के जिन मुद्दों को रखा है,उनमें समाज व परिवार में नारी की चिंतनीय दशा प्रमुख है। मन्नू भंडारी के साहित्य लेखन की बनावट और बिनावट इसी मुद्दे को पङ और विपक्ष में रखते हुएनारीत्व को पूर्णता प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ता है. नारी विमर्श पुरूष विरोधी झंडा लेकर आगे चलने वाला नकारात्मक विर्श नहीं,बल्कि एक स्वस्थ मानवीय दृष्टिकोण है। इसकी व्यापकता और विस्तार को स्पष्ट करने वाला है-मन्नू बडारी की कथा साहित्य। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि मन्नू भंडारी ने बहुत ज्यदा नहीं लिखा है,लेकिन जितना लिखा तो तन्मयता,गरी संलग्नता और ईमानदारी से लिखा है। यही वजह है कि मन्नू भडारी के साहित्य का अध्ययन और उसमें नारी विमर्श की स्थिति का पता करने के लिये प्रस्तुत शोध अध्ययन का महत्व है।

अध्यायीकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन को पूरा करने के लिये शोध की रूपरेखा तैयार करना आवश्यक होती है। प्रस्तुत अध्ययन के लिये निम्न प्रकार से अध्यायीकरण अध्ययन को पूरा किया गया है,ताकि अध्ययन की प्रांसगिकता और तार्किकता को बरकरार रखते हुए शोध के उद्देशयों को पूरा किया जा सकें।

प्रस्तुत अध्ययन का अध्यायीकरण इस प्रकार से किया गया है.

1-अध्याय-01-प्रस्तावना-इस अध्याय में आमुख,शोध के उद्देश्य, परिकल्पना, शोध का महत्व, वर्तमान में प्रांसगिकता, न्यादर्श का चयन, पूर्व साहित्य का अध्ययन और अध्ययन के औचित्य का वर्णन किया जायेगा।

2-अध्याय-02-स्वतंत्रता के बाद नारी की स्थिति-इस अध्याय में नारी की स्थिति के साथ ही आजादी के बाद भारत में नारियों को लेकर बदल रहे दृष्टिकोण का वर्णन किया जायेगा।

3-अध्याय-03-नारी संबंधी चेतना का विकास और स्त्री विमर्श-प्रस्तुत अध्ययन में नारी चेतना के विकास क्रम के साथ ही उस दौर में हुए स्त्री विमर्श का अध्ययन शामिल किया जायेगा।

4-अध्याय-04-मन्नू भंडारी के उपन्यास मे नारी विमर्श-इस अध्याय में मन्नू भंडारी के द्वारा लिये गये उपन्यासों में वर्णित नारी की स्थिति का वर्णन किया जायेगा।

5-अध्याय-05-मन्नू भंडारी के कहानियों मे नारी विमर्श-इस अध्याय में मन्नू भंडारी के द्वारा लिये गये कहानियों में वर्णित नारी की स्थिति का वर्णन किया जायेगा।

6-अध्याय-06-मन्नू भडारी के कथेत्तर साहित्य मे नारी की स्थिति-इस अध्याय में कथा साहित्य के अलावा मन्नू भंडारी के साहित्य में नारी की स्थिति का वर्णन किया जायेगा।

7-अध्याय-07-सारांश,निष्कर्ष और सुक्षाव-प्रस्तुत अध्ययन में शोध के सांराश,निष्कर्ष और सुक्षावों का वर्णन किया जायेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1-मन्नू भंडारी (1994), दस प्रतिनिधि कहानियां, किताब नगर प्रकाशन, पेज क्रमांक 6।

2-सिंह, आर.एस. (1973), मन्नू भंडारी, भारतीय साहित्य, पेज क्रमांक 133-142।

3-भंडारी, मन्नू, यह कहानी यह भी (आत्मकथा), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, अंसारी मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली (2009)।

3-यादव ,राजेद्र, भंडारी मन्नू (2009), एक इंच मुस्कान (सहयोगी उपन्यास), राजपाल एंड संस, प्रकाशन कश्मीरी गेट, दिल्ली।

4-भंडारी मन्नू, आपका बंटी (उपन्यास), राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियांगज, नई दिल्ली।

5-भंडारी, मन्नू (कहानी संग्रह), 2006, मैं हार गई, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

6-अभिताभ, ड़ॉ वेद प्रकाशन, नयी कहानी, प्रतिनिधि हस्ताक्षर, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा।

7-शर्मा, ड़ॉ रंजना, 1988, पुस्तकालय, मथुरा।

8-अग्रवाल,पुरूषोत्तम, संस्कृति, वर्चस्व और प्रतिरोध,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली।

9-अज्ञेय,नदी के द्रीप,सरस्वती प्रेस इलाहाबाद।

10-कमलेश्वर,मॉस का दरिया(कहानी संग्रह),अक्षर प्रकाशन,संस्करण,1980।

11-कौशिक विश्भ्मभर नाथ शर्मा,भिखारिणी,वाणी प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली।

12-खेतान,डॉ प्रभा,स्त्री उपेक्षिता(अनुवादित)हिंदी पॉकेट बुक्स,नई दिल्ली।

13-खत्री,देवकीनंदन,चंद्रकांता,लायब्रेरी बुक सेंटर,दिल्ली।

14-गुप्ता रमणिका,स्त्री विमर्श,कलम और कुदाल के बहाने शिल्पायन प्रकाशन,नई दिल्ली।

15-गोस्वामी किशोरी लाल,माधवी-माधव,राधाकृष्ण प्रकासन,नई दिल्ली